Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=211
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY 2023, VOL-11/57
https://doi.org/10.5281/zenodo.8098844

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन

डॉ वंदना शर्मा

प्राचार्य, राधाबल्लभ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

Paper Received On: 20 May 2023

Peer Reviewed On: 28 May 2023

Published On: 1 June 2023

Abstract

संवेग को व्यवहार की गतिशीलता में वर्गीकृत किया जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। संवेग प्रत्येक व्यक्ति के हृदय से उद्गम होता है। संवेग उद्गम की मात्रा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति की संवेगात्मक परिपक्वता से संबंधित होती है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने उद्देश्य के रूप में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन व विभिन्न आयामों के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर है या नहीं यह जानने का प्रयास किया गया। प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर नगर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 के 400 छात्रों को ही सम्मिलित किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम निरंतरता के अलावा सभी आयामों में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

संवेगात्मक परिपक्वता न केवल किशोर विद्यार्थी की व्यक्तित्व की विशेषताओं को प्रभावित ही नहीं करता वरन किसी भी परिस्थिति में स्वयं व्यक्ति विद्यार्थी द्वारा सामान्य रूप से प्रस्तुत करना भी संवेगात्मक रूप से परिपक्वता का लक्षण है या गुण विशेषता मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है जितना ज्यादा व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण कर लेता है वह अपने जीवन में उतना अधिक खुश, चिंता मुक्त, संतोषी महसूस करता है। किसी अच्छे शैक्षिक कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य होता है कि अधिगमी को संवेगात्मक रूप से परिपक्व बनाया जाए जैसे जो किशोर स्वयं की भावना अनुभूति पर नियंत्रण कर सके किशोर समाज के आदर्श विचार के अनुकूल व्यवहार प्रेषित करते हैं। संभवतः किशोर विद्यार्थी जल्दी ही अपना संयम खो देते हैं, कभी–कभी शीघ्रता से उत्साही होकर प्रतिभागी बन जाते हैं इसलिए **जॉन डीवी ने सत्य ही कहा है कि किशोरावस्था तनाव संघर्ष एवं तूफान का कल है** अतः इस समय किशोर को सही मार्गदर्शन देने

की अत्यंत आवश्यकता है। वर्तमान समय को प्रतिस्पर्धा का युग कहें तो अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि प्रत्येक किशोर विद्यार्थी के जीवन के अनेक लक्ष्य होते हैं वह उन्हें पाने की ललक के कारण कई बार अवसाद ग्रसित, संवेगात्मक रूप से अस्थिर हो जाते हैं। वर्तमान समय में उदाहरणार्थ शोधार्थी ने अपने चारों ओर के वातावरण में पाया कि अधिकतर विद्यार्थी कक्षा 10, 12 या शैक्षिक क्षेत्र अभियांत्रिकी एवं चिकित्सा क्षेत्र में मनचाहा परिणाम प्राप्त न होने पर किशोर स्वभाव में चिड़चिड़े, क्रोधी, आत्मविश्वास की कमी अर्थात संवेगात्मक रूप से स्थिर हो जाते हैं, कभी–कभी आत्महत्या का प्रयास करते हैं। किशोर का कोविड–19 के पश्चात मोबाइल के प्रति आकर्षण अधिक बढ़ा है जिसका दुष्परिणाम उनकी शारीरिक, संवेगात्मक व मानसिक विकास पर पड़ा है। अतः शोधार्थी ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई भिन्नता है या नहीं इस तथ्य को जानने हेतु उक्त शोध समस्या का चयन किया।

समस्या कथन

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

प्रस्तावित शोध क्षेत्र में किए गए संबंधित साहित्य का अध्ययन एवं अन्वेषण

1. उपाध्याय, हिंदी एवं उनके साथियों (2020) ने जिला आनंद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की 14 से 17 वर्ष आयु वर्ग के संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया व उपकरण के रूप में तारा सबपंथी का संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. **कौर, एम. (2001).** ने किशोरावस्था की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 356 किशोर विद्यार्थी को चयनित किया गया। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि क्षेत्र, विद्यालय प्रकार व लिंग के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. **बाग, बी. (2008).** ने किशोरावस्था की अभिभावकीय सहभागिता का संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य संबंध का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थी का चयन किया गया। शोधोपरांत पाया गया कि लिंग के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।

4. **मलिक, रिंकू व उनके साथियों (2014).** ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का संवेगात्मक परिपक्वता एवं उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर है।

5. **गक्कर, एस. सी.(2003).** ने पाया कि लिंग का संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई भिन्नता नहीं है।

6. ठाकुर (2002). ब्रोकवर एवं उनके साथियों (1964) एवं बर्वन (1962). ने संवेगात्मक परिपक्वता एवं उनके जीवन जीने के तरीके के मध्य संबंध का अध्ययन किया। यह अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया। निष्कर्षस्वरूप पाया कि वे विद्यार्थी जो अपने विद्यालय में अपनी योग्यता के कारण अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे। इसका कारण विद्यार्थियों का मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य का संवेगात्मक परिपक्वता के साथ सार्थक व धनात्मक संबंध है।

7. मुखर्जी (2000). ने अपने शोध के परिणामस्वरुप पाया कि जो लोग संवेगात्मक रूप से परिपक्व हैं। मानसिक स्वास्थ अच्छा हैं और अपने जीवन में अच्छी तरीके से समायोजित हैं उनमें संवेगात्मक परिपक्वता उच्च पाई गई।

शोध के उद्देश्य

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।
4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाएं

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर–शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं

परतंत्र कर–संवेगात्मक परिपक्वता

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श विधि

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने सौदेश्य विधि द्वारा शासकीय माध्यमिक विद्यालय का चयन किया गया। विद्यार्थी को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर नगर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 के 800 विद्यार्थी को ही सम्मिलित किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध के निमित्त उपकरण के रूप में तारा सबपंथी द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियां

प्रस्तुत भोध अध्ययन में प्रदत्तों के सारणीयन एवं निश्कर्श प्राप्त करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका क्रमांक 1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान एवं सार्थकता स्तर।

क्षेत्र	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
शहरी	छात्र	200	124	14	5.05	0.01 सार्थक है।
ग्रामीण	छात्र	200	136	10		

उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत परिणाम का गहनता से अध्ययन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि शहरी छात्रों की तुलना में ग्रामीण छात्रों का संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान मूल्य उच्च है जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र के छात्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों को दैनिक आवश्यकता की पूर्ति करने हेतु निम्न आर्थिक स्थिति के कारण उन्हें विभिन्न चुनौतियां, समस्याएं झेलनी पड़ती है जिसके कारण वे धीरे–धीरे संवेगात्मक रूप से परिपक्व हो जाते हैं। उदाहरणार्थ अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्र के किशोर निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ शैक्षिक रूप से भी पिछड़े होते हैं जिसके कारण उन्हें किसी भी कामकाज को करने में अधिक परेशानी झेलनी पड़ती है, कई बार लोगों का व्यवहार भी उनके प्रति

सम्मानपूर्वक नहीं होता है। उक्त तथ्य की पुष्टि दोनों समूह के मध्य प्राप्त टी–मान से भी हो रही है। अतः शोध परिकल्पना **"शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है"** को अस्वीकृत किया जाता है।

2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता का विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका क्रमांक 2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों का विभिन्न आयामों के आधार पर मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान एवं सार्थकता स्तर।

क्र.सं.	संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	आत्मज्ञान	शहरी छात्र	200	23	2.76	4.07	0.01 सार्थक है।
		ग्रामीण छात्र	200	25	1.10		
2	आत्मविश्वास	शहरी छात्र	200	23	2.34	10.26	0.01 सार्थक है।
		ग्रामीण छात्र	200	26	1.56		
3	वास्तविकता के प्रति स्वीकृति	शहरी छात्र	200	16	1.83	15.26	0.01 सार्थक हैं।
		ग्रामीण छात्र	200	21	2.15		
4	आत्म नियंत्रण	शहरी छात्र	200	17	2.74	12.04	0.01 सार्थक हैं।
		ग्रामीण छात्र	200	21	1.45		
5	सामाजिक समायोजन	शहरी छात्र	200	22	1.95	5.05	0.01 सार्थक हैं।
		ग्रामीण छात्र	200	20	1.79		
6	निरंतरता	शहरी छात्र	200	22	2.82	1.66	0.05 सार्थक नही हैं।
		ग्रामीण छात्र	200	21	2.01		

उपर्युक्त तालिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम निरंतरता के अलावा संवेगात्मक परिपक्वता के सभी आयाम 0. 05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्र विभिन्न परिस्थितियों को को झेलने के

कारण वास्तविक दुनिया की समझ जल्दी आ जाती है, साथ ही उनमें आत्मविश्वास भी आ जाता है कि यह काम मैं कर सकूंगा या नहीं। उन्हें यह समझ विकसित हो जाती है कि मैं अपनी परिस्थितियों के कारण स्वयं को कहां नियंत्रित करना है, कहां किस तरह से अपनी बात को रखना है अर्थात उनमें आत्मनियंत्रण की भावना भी विकसित हो जाती है। जबकि शहरी क्षेत्र के छात्र अधिकतर उच्च आर्थिक पृष्ठभूमि के एवं उनके माता–पिता पढ़े–लिखे होते हैं जिसके कारण उन्हें विभिन्न प्रकार के सामाजिक वातावरण देखने को मिलते हैं इसलिए वे समाज में समायोजन आसानी से कर पाते हैं। अतः शोध परिकल्पना **"शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है"** को अस्वीकृत किया जाता है। उक्त तथ्य की पुष्टि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के आधार पर प्राप्त टी–मान से भी हो रही है।

3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका क्रमांक 3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मान, टी–मान एवं सार्थकता स्तर।

क्षेत्र	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
शहरी	छात्रायें	200	118.64	21.56	7.84	0.01 सार्थक है।
ग्रामीण	छात्रायें	200	110.98	17.65		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि शहरी क्षेत्र की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान मूल्य (118.64) एवं मानक विचलन (21.56) तथा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान मूल्य (110.64) एवं मानक विचलन (17.65) है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट हो रहा है कि ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्र की छात्राओं का मध्यमान मूल्य उच्च है। साथ ही प्राप्त टी–मान 7. 84 जो कि सांख्यिकी दृष्टिकोण से 0.01सार्थक है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र की छात्राओं को बेहतर सुविधाएं, उपयुक्त पालन पोषण तथा विद्यालयी शैक्षिक व सह शैक्षिक क्रियाओं में भाग लेने के अवसर अनेक मिलते हैं। जिनके कारण उन्हें विभिन्न प्रकार के सुखद व दुखद अनुभव प्राप्त होते हैं जो कि उन्हें हर परिस्थिति में स्वयं को समायोजित करने की प्रेरणा देते हैं जिससे वे धीरे–धीरे संवेगात्मक रूप से अधिक स्थिर हो जाती हैं, साथ ही संभवतः उनमें संवेगात्मक रूप से परिपक्वता ग्रामीण छात्राओं की तुलना में अधिक आ जाती है। अतः शोध परिकल्पना **"शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है"** को अस्वीकृत किया जाता है।

4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका क्रमांक 4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों का विभिन्न आयामों के आधार पर मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान एवं सार्थकता स्तर।

क्र.सं.	**संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम**	**समूह**	**संख्या**	**मध्यमान**	**प्रामाणिक विचलन मान**	**टी-मान**	**सार्थकता स्तर**
1	आत्मज्ञान	शहरी	200	24	3	21.06	0.01 सार्थक है।
		ग्रामीण	200	17	2		
2	आत्मविश्वास	शहरी	200	25	3	23.05	0.01 सार्थक है।
		ग्रामीण	200	15	2		
3	वास्तविकता के प्रति स्वीकृति	शहरी	200	19	5	3.20	0.01 सार्थक हैं।
		ग्रामीण	200	21	3		
4	आत्म नियंत्रण	शहरी	200	17	2	11.92	0.01 सार्थक हैं।
		ग्रामीण	200	21	2		
5	सामाजिक समायोजन	शहरी	200	19	4	3.21	0.01 सार्थक हैं।
		ग्रामीण	200	22	3		
6	निरंतरता	शहरी	200	22	2	14.43	0.01 सार्थक हैं।
		ग्रामीण	200	17	2		

तालिका सं॰ 4. के अवलोकन से विदित होता है कि शहरी क्षेत्र की छात्राओं में संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम आत्मज्ञान, आत्मविश्वास एवं निरंतरता का मध्यमान मूल्य, ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में उच्च दृष्टिगोचर हो रहा है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम आत्मनियंत्रण, वास्तविकता के प्रति स्वीकृति एवं समाजिक समायोजन का मूल्य शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अपेक्षा उच्च है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र की छात्राओं का पारिवारिक वातावरण अनुकूल व विभिन्न क्रियाओं में भागीदारी लेने के कारण उनमें स्वयं के प्रति विश्वास, स्वयं के ज्ञान की वृद्धि (अमुक कार्य हम कर पाएंगे या नहीं) किसी भी कार्य को जब तक संपूर्ण ना करें तब तक निरंतर करते रहते हैं, यह गुण विधमान हो जाता है। वरन ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में उनकी पारिवारिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक परिवेश के प्रभाव के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं की भावनाओं

पर नियंत्रण करना सीख जाती हैं। साथ ही समाज की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के कारण या अनुभव होने के कारण वे शीघ्रता से स्वयं को समाज में समायोजित कर पाती है तथा वास्तविक दशाओं में स्वयं को अनुकूलित करने का प्रयास करती है अर्थात वास्तविकता के प्रति स्वीकृति मान लेती है। उक्त तथ्य की पुष्टि प्राप्त टी–मान से हो रही है। अतः शोध परिकल्पना **"शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है"** को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम निरंतरता के अलावा सभी आयामों में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। संवेगात्मक परिपक्वता के सभी आयामों में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Adhikari, G.S., (1998), "Comparative study of Emotional Maturity of University Students &Teacher,"Psychological Abstract, Vol.9, pp. 65-66.

Anju, (2000), "A comparative study of emotional maturity in relation intelligence and sex"M.Ed. Dissertation, Punjab University, Chandigarh.

Kaur, M. (2003). Emotional Maturity of Senior secondary students in relation in to intelligence and family climate on M.Ed. Dissertation, P.U., Chandigarh.

Singh, A. & Broota, A. (1992). Social–Personal Variables and Examination Anxiety. Jr. of Indian Academic of Applied Psychology, Vol.8, pp.73-78.

Valluri, I. (2003). Effect of Parent Child Relationship on Emotional Maturity of Senior Secondary School Students.Unpublished M.Ed. Dissertation, Punjab University.Chandigarh.

Verma, R.P.S. (1977). A Study of School Learning as aFunction of Socio-Emotional Climate of the Class.Ph.D. Edu. Rajasthan University

Singh, vinita. (2015). Emotional Maturity across Gender and Level of Education. The International Journal of Indian Psychology.Vol. 2. Issue 2. ISSN 2348–5396.

Upadhya, Henley & et.al (2020),"A study on emotional maturity in and adolescent group studying at a higher secondary school in western India." Published by the international journal of Indian psychology 8(4):72-77. Referred on DOI 20215/20804011.

Cite Your Article As:
Vandana Sharma. (2023). SAHARI EVUM GRAMIN SHETR KE MADHYAMIK VIDYALAYO KE VIDYARTHI KI SAVEGATMAK PARIPAKVTA KA ADHYYAN. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,, 11(57), 227–234. https://doi.org/10.5281/zenodo.8098844

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language